

Vol III Issue VII Jan 2014

Impact Factor : 1. 9508(UIF)

ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 1. 9508(UIF)

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595

ISSN No.2231-5063

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board. Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho Federal University of Rondonia, Brazil	Mohammad Hailat Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken	Hasan Baktir English Language and Literature Department, Kayseri
Kamani Perera Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka	Abdullah Sabbagh Engineering Studies, Sydney	Ghayoor Abbas Chotana Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]
Janaki Sinnasamy Librarian, University of Malaya	Catalina Neculai University of Coventry, UK	Anna Maria Constantinovici AL. I. Cuza University, Romania
Romona Mihaila Spiru Haret University, Romania	Ecaterina Patrascu Spiru Haret University, Bucharest	Horia Patrascu Spiru Haret University, Bucharest,Romania
Delia Serbescu Spiru Haret University, Bucharest, Romania	Loredana Bosca Spiru Haret University, Romania	Ilie Pinteä, Spiru Haret University, Romania
Anurag Misra DBS College, Kanpur	Fabricio Moraes de Almeida Federal University of Rondonia, Brazil	Xiaohua Yang PhD, USA
Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania	George - Calin SERITAN Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences AL. I. Cuza University, Iasi	More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India	Iresh Swami Ex - VC. Solapur University, Solapur	Rajendra Shendge Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur
R. R. Patil Head Geology Department Solapur University,Solapur	N.S. Dhaygude Ex. Prin. Dayanand College, Solapur	R. R. Yalikal Director Managment Institute, Solapur
Rama Bhosale Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel	Narendra Kadu Jt. Director Higher Education, Pune	Umesh Rajderkar Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik
Salve R. N. Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur	K. M. Bhandarkar Praful Patel College of Education, Gondia	S. R. Pandya Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai
Govind P. Shinde Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai	Sonal Singh Vikram University, Ujjain	Alka Darshan Shrivastava Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar
Chakane Sanjay Dnyaneshwar Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune	G. P. Patankar S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka	Rahul Shriram Sudke Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore
Awadhesh Kumar Shirotriya Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)	Maj. S. Bakhtiar Choudhary Director,Hyderabad AP India.	S.KANNAN Annamalai University,TN
	S.Parvathi Devi Ph.D.-University of Allahabad	Satish Kumar Kalhotra Maulana Azad National Urdu University
	Sonal Singh, Vikram University, Ujjain	

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.net



GRT

नई सहस्राब्दी में महिला विकास परम्परा और प्रासंगिकता के सन्दर्भ में

निशा वालिया

असिसटेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, डी.ए.वी. (पी.जी.) कॉलेज, देहरादून

सारांश :- सदियों से उत्पीड़ित विश्व की लगभग 50 प्रतिशत जनसंख्या 'महिला' के उद्धार, कल्याण व विकास की लहर 1970 के दशक में पूरे विश्व में फैल गई। उनके कल्याण व विकास को अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दा बनाने का प्रयास किया गया। महिला विकास का प्रश्न एक ऐसा सामाजिक मुद्दा है जिसने समाज सुधारकों, सामाजिक चिंतकों, महिलावादी विचारकों और विकास में रुचि रखने वाली संस्थाओं का ध्यान आकर्षित किया है। वर्ष 1975 को जब अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष घोषित किया गया था तब से यह अनुभव किया जा रहा है कि किसी भी देश में महिलाओं के विकास की कोई भी व्यूह रचना तब तक क्रियान्वित नहीं हो सकती जब तक वहाँ के सांस्कृतिक व ऐतिहासिक आयामों का अध्ययन न कर लिया जाए।

प्रस्तावना :

वर्तमान में महिला विकास आन्दोलन चरम पर है। इन आन्दोलनों के आधार भूत प्रश्नों पर महिलाओं की माँगे प्रतिबिम्बित होने लगी जिनकी पूर्ति के लिए अनेक नीतियों एवं कार्यक्रमों को प्रारम्भ किया गया। आज महिलाएँ सम्पूर्ण विश्व अनुसंधान कार्यों का प्रमुख विषय बन गई हैं।

प्रस्तुत शोध-पत्र का मुख्य विषय है महिला विकास। यहाँ महिला विकास से तात्पर्य केवल महिलाओं पर किये जाने वाले सरकारी व्ययों की राशि में वृद्धि से नहीं है अपितु महिला वर्ग के जीवन पर पड़ने वाले वास्तविक दृश्य तथा अदृश्य प्रभावों से लिया गया है। महिला दिवस के प्रमुख मापक हैं— महिलाओं के प्रति समाज के दृष्टिकोण में परिवर्तन, महिलाओं में स्वयं की स्थिति में सुधार व विकास हेतु चेतना जागृत होना, उनका स्वयं के जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण उनकी साक्षरता, स्वास्थ्य, पोषण, रोजगार, शिक्षण—प्रशिक्षण, विवाह के प्रति दृष्टिकोण, उनकी विचारधारा, विभिन्न अंधविश्वासों, परम्पराओं व रूढ़ियों के प्रति उनकी भावनाओं में परिवर्तन, राजनीतिक व आर्थिक क्षेत्रों में उनकी रुचि का प्रादुर्भाव, स्वयं को अबला के स्थान पर सबला समझ पाने तथा शोषण के विरुद्ध आवाज उठाने की प्रवृत्ति का बीजारोपण, जीवन के हर क्षेत्र व हर पहलू के प्रति उनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण की उत्पत्ति तथा उनकी जागरूकता के कारण समाज की अनेक विकारपूर्ण स्थितियों का विघटन।

यदि आपको विकास करना है तो महिलाओं का उत्थान करना होगा। महिलाओं का विकास होने पर समाज का विकास स्वतः ही हो जायेगा। (जवाहर लाल नेहरू)

महिला के विकास में व्यक्तिगत तथा सामाजिक स्वतंत्रता के साथ-साथ आर्थिक स्वतन्त्रता भी एक महत्वपूर्ण पहलू है। आर्थिक स्वतन्त्रता के बिना महिला विकास असम्भव है, महिला की आर्थिक परतन्त्रता के कारण ही पुरुष वर्ग ने उस पर अधिकार जमाया है। मार्क्सवादी लेखकों के मतानुसार— "आर्थिक परतन्त्रता ही नारी की वैयक्तिक स्वतन्त्रता के मार्ग में बाधा का निर्माण करती है।"

एक नहीं दो-दो मात्राएँ, नर से बढ़कर नारी।

परिवार की आधारशिला है नारी जिसके बिना परिवार रूपी पौधे के अंकुरित, पल्लवित, पुष्पित तथा फलित होने का प्रश्न नहीं उठता। चूँकि नारी अर्थव्यवस्था से आवश्यक रूप से संबंधित है, नारी का विकास किये बिना हम अर्थव्यवस्था के विकास की कल्पना तक नहीं कर सकते।

नारी ब्रह्म विद्या है, श्रद्धा है, शक्ति है, पवित्रता है, कला है, और वह सब कुछ है, जो इस संसार में सर्वश्रेष्ठ के रूप में दृष्टिगोचर होता है। हमारे देश में नारी की क्षमताएँ और उसकी प्रतिभा उस समय से अधिक उजागर हुई जब राजाराम मोहन राय और ईश्वर चन्द्र विद्यासागर जैसे नेताओं ने अपने सुधार आन्दोलनों में नारी शिक्षा व विकास को प्रमुख स्थान दिया।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के 63 वर्षों में महिलाओं की स्थिति में क्रांतिकारी परिवर्तन आया है। वर्तमान में महिलायें आर्थिक, राजनीतिक,

धार्मिक और सामाजिक दासता से निकल कर स्वतन्त्र जीवन का विकास करने की सभी सुविधायें प्राप्त कर रही है। यह भी सत्य है कि मिस यूनिवर्स एवं विश्व सुन्दरी का सम्मान पाने से लेकर प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति पद तक, वायु यान चालकों से लेकर अन्तरिक्ष जैसे उन्नत तकनीकी क्षेत्रों में आज महिलाओं का आधितय होता जा रहा है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा आयोजित विश्व सम्मेलनों में जो भारतीय प्रतिनिधि के रूप जुडी वो शासकीय, स्वेच्छिक संगठनों तथा संसदीय कार्यों की ज्ञाता थी।

समाज के विकास में महिलाओं के सम्यक् सहयोग और तज्जनति हित में उनका समाज अधिकार पर अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय में द्वितीय विश्व युद्ध के बाद ध्यान दिया गया, जिसमें गति संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना के बाद आयी। इस हेतु सन् 1946 में महिलाओं की दशा पर कमीशन की स्थापना की गई। कालान्तर में यह पाया गया कि विकास की गतिविधियों में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी हो।

सन् 1976 से 1985 तक के दशक को महिला दशक के रूप में रखा गया। इस अवधि में महिलाओं के प्रति किए जाने वाले भेदभाव को समाप्त करने के लिए अनेकों कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन अन्तर्राष्ट्रीय प्रयासों के परिणाम स्वरूप भारत सहित विश्व के तमाम देशों में महिलाओं को पुरुषों के समान अवसर देने के लिए नीतियाँ, कार्यक्रम एवं कानून बनाए गए। उनके व्यक्तित्व के विकास, आर्थिक उत्पादकता बढ़ाने और निर्णय की प्रक्रिया में सहभागिता का अवसर देने के लिए बहुआयामी प्रयत्न किए गए। इन प्रयत्नों के परिणाम स्वरूप महिलाओं की दशा में उल्लेखनीय सुधार हुए। इस दौरान शोध एवं अनुभव से यह पाया गया कि महिलाओं की दशा और विकास का अन्योन्यश्रित सम्बन्ध है। इसी तथ्य को सन् 1992 के 'विश्व जनसंख्या की दशा' के संस्करण में लिखा गया है कि बिना महिलाओं के विकसित हुए किसी का भी दीर्घकालिक विकास नहीं हो सकता। (U.N.F.P.A., 1992, p. 13) जिन क्षेत्रों में महिलाओं का दर्जा, ऊँचा है उन क्षेत्रों में आर्थिक वृद्धि एवं जीवन की गुणवत्ता में सुधार काफी तेजी से हुआ है, परन्तु सुधार की गति अभाव ग्रस्त महिला वाले क्षेत्रों अल्पतम है।

महिला विकास के लिए नित नई विषय-सूची और नए तरीके सुझाए जा रहे हैं। महिलाओं के विकास हेतु योजना प्रक्रिया में अनेक प्रावधान रखे गये लेकिन फिर भी महिलाओं की विकास दर पुरुषों से कम है।

प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तक महिलाओं ने विकास के परिप्रेक्ष्य में अनेक उतार-चढ़ाव देखे हैं। अस्तु महिलाओं को अपने समग्र विकास के लिए आगे आना होगा।

स्वाभाविक है कि भारतीय समाज को नारी के सम्पूर्ण विकास के लिए उदारवादी स्वरूप धारण करना होगा और नारी को इस द्वैतवादी विडम्बना से बाहर निकालकर उसे पुरुष के समान अधिकार, मौलिक चिन्तन के लिए परिवेश, आत्मोत्थान के लिए नवीन दिशा और विकास के लिए समुचित अवसर प्रदान करने होंगे। इस हेतु शासकीय स्तर पर किए जा रहे प्रयास ही पर्याप्त नहीं होंगे बल्कि प्रत्येक व्यक्ति को महिला विकास के उचित समाधान के लिए जागरूक होना होगा क्योंकि यही वर्तमान समय की महती आवश्यकता है। अभी तक महिलाओं को जीवन नैया की पतवार स्वयं सन्हालने का अधिकार नहीं दिया गया है। महिलाओं का सम्पूर्ण विकास कर उन्हें सशक्त बनाना आज सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा है। इसके लिए महिलाओं को कानूनी अधिकारों का पूर्ण ज्ञान देना आवश्यक है। जिससे वे अपने ऊपर होने वाले अत्याचार, अन्याय तथा शोषण का मुकाबला कर सकें। इसके लिए महिलाओं को शिक्षित होना होगा जिससे कि वे एक आदर्श जीवन जी सकें।

वर्तमान में गैर-सरकारी संस्थाएँ भी सरकार के द्वारा महिला विकास सम्बन्धी चलाये गए विभिन्न जागरूकता अभियानों में सेतु का कार्य कर रही हैं। गैर-सरकारी महिला संस्थाएँ भी महिलाओं के जीवन के प्रत्येक पहलू का विकास करने के लिए उन्हें उचित अवसर उपलब्ध करवाकर उन्हें गौरवमय जीवन व्यतीत करने के लिए प्रेरित रही है।

राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर महिला दिवस मनाए जाते हैं लेकिन इन सबके बाद भी कन्या भ्रूण हत्या पर रोक नहीं लग पायी है। आज ग्राम-पंचायतों में तीस प्रतिशत सरपंच महिला हैं पर उनका शोषण बंद नहीं हुआ है। महिला सशक्तिकरण की बात करना और बात है पर वास्तव में सशक्त बनाना हँसी-खेल नहीं है। महिला विकास के लिए लम्बे चौड़े वायदे किए जाते हैं लेकिन महिलाएँ वहीं की वहीं रहती हैं। यदि महिलाओं को अपना विकास चाहिए तो खुद को शिक्षित करें, अन्याय का डटकर मुकाबला करें तथा ईर्ष्या, द्वेष, त्यागकर महिलाओं का सहभागी बनना होगा। तभी पुरुष प्रधान समाज में महिलाएँ ज्वलन्त चेतना प्रदर्शित कर सकती हैं।

“नारी की उन्नति या अवनति पर ही राष्ट्र की उन्नति य अवनति निर्धारित है।” (अरस्तू)

महिलाओं के विकास का आधुनिक इतिहास, विश्व में संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना से एवं भारत में भारतीयों द्वारा बनाए गए संविधान से शुरू होता है। संयुक्त राष्ट्र संघ के चार्टर की धारा 1(3) और 8 इसकी आधार शिला है। विश्व में महिलाएँ बिना भेदभाव अन्याय या हिंसा से डरे अपनी प्रगति कर सके, एवं समाज के उत्थान एवं विश्वशान्ति में अपना सक्रिय योगदान दे सकें, इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु 18.12.79 को जनरल असेम्बली में महिलाओं के लिए 'बिल ऑफ राइट' बनाया गया।

विश्व स्तर पर कराये जा रहे सर्वेक्षण से यह तथ्य सामने आये हैं कि 'विश्व स्तर पर महिला विकास के लिए चलाए जा रहे आंदोलनों के माध्यम से समाज में नवीन विचारों की गूँज अवश्य हुई है किंतु कोई स्थायी प्रभाव दिखाई नहीं देता, महिलाओं के साथ क्रूर मजाक जो सदियों पहले होता था, आज भी विद्यमान है।

वर्तमान में स्वतन्त्रता की खोज में नारी दिग्भ्रमित है। समकालीन समाज में नारी प्रतिभा विकास की कसौटी है, परन्तु हाय दुर्भाग्य जो नारी जितना अंग प्रदर्शन कर सकें वह उतनी ही प्रतिभावान। आज नारी अंग प्रदर्शन को उद्योग का मूल मंत्र मान लिया गया है। मॉडलिंग चाहे शैम्पू, साबुन, चाय, सर्फ कि हो या जूता-चप्पल की सभी में राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय कम्पनियाँ नारी का खुला प्रदर्शन कर रही हैं और स्वयं नारी इसे अपनी स्वतन्त्रता का हेतु मान बैठी हैं। हैरानी इस बात की है कि ये दोश अशिक्षित नारी की तुलना में शिक्षिता में अधिक है। प्रतिभा के इस नये मानक के खिलाफ नाजोगी बुल्फ ने जेहाद छेड़ा है कि “यह नारी की समूची क्षमताओं की देह तक सीमित करने वाली खतरनाक साजिश है।”

महिला दिवस की धुरी स्वयं एक आदर्श विचारशील, मर्यादित कर्तव्यपरायण, शिक्षित महिला के चारों ओर धूम रही है। यही नारी की वास्तविक स्वतन्त्रता का केन्द्र है। शिक्षित नारी स्वतन्त्रता के पथ पर चले, किन्तु पथ भ्रष्ट, धर्मलिप्सा से ग्रसित, उपभोक्तावादी संस्कृति के

उपयोग की वस्तु न बने। साथ ही शिक्षित महिलाओं को यह भी देखना होगा कि महिला विकास केवल कागजी आंकड़ों पर न हो वह यथार्थ की भूमि का स्पर्श करता हुआ महिलाओं का वास्तविक विकास करें तभी सम्पूर्ण विश्व की उन्नति संभव है।

नई चमकदार चाँदनी मे भीगी
उमंगों आशाओं कर्तव्यों से भरी
कर्मठ जिज्ञासु रत्नगर्भा
अधिकारों के प्रति सजग
नारी, आओ
स्वागत है तुम्हारा
नई नवेली सदी की
देहरी पर।

स्त्रियों की शक्ति अपार, अगाध और असीम है। वे स्वयं शक्ति, लक्ष्मी और सरस्वती है। फिर भी स्त्रियों का मूल मंत्र सदा से 'परार्थ स्व-समर्पणम्' ही रहा है। नारी शक्ति का अक्षय स्रोत है।

अमेरिका में महिलाओं की प्रगति के लिए अनेक विद्यालय तथा कॉलेज खोले गए तथा उन्हें खुली हवा में साँस लेने का अधिकार दिया गया, जिससे वो अपनी शिक्षा तथा स्वास्थ्य पर ध्यान दे सकें। इसी तरह रूस की स्त्रियाँ भारत ही नहीं पश्चिम के अन्य देशों की तुलना में सबसे सुखी हैं। चीन की महिलाओं को भी अपने देश में सभी महत्वपूर्ण अधिकार प्राप्त हैं।

इधर भारतीय मुस्लिम महिलाओं की तुलना में तुर्किस्तानी मुस्लिम महिलाएँ अधिक सुखी हैं वहाँ नारी सौन्दर्य और आनन्द की प्रतीक नहीं वरन् उसे अनेक अधिकार भी प्राप्त हैं। ईरानी स्त्रियाँ भी पुराने रीति-रिवाजों को तलाक देती जा रही हैं। वहाँ समाचार पत्रों में स्त्री शिक्षा का प्रचार किया जा रहा है।

अतः युग बदल रहा है स्त्रियाँ अब अबला नहीं है। वह आज अंतर्राष्ट्रीय आकाश में विचरण कर रही है।

किसी भी देश के निर्माण में नारी की भूमिका सदा गरिमामय रही है। एक बार नेपोलियन बोनापार्ट ने कहा था – “तुम मुझे सुमाताएं दे सको तो मैं तुम्हे एक महान जाति दे सकता हूँ।” डॉ. एनीविसेंट के कथानुसार— ‘नारी वर्ग असत्य को दूर भगाकर सत की पुनः प्रतिष्ठा करता है।’

लेकिन स्वाधीनता और संघर्श के झूले में दोलयमान नारी आज भी पूर्ण विकास के लिए एक तड़फ रही है।

प्रेमचन्द ने कहा है कि ‘जब पुरुष में नारी के गुण आते हैं तो वह देवता बन जाता है किन्तु जब नारी में पुरुष के गुण आते हैं तो वह दानवी बन जाती है। नारी ही वह पारस स्पर्श हे जो नर लोह को स्वर्णिम कांति तक पहुँचाती है।

सत्य तो यह है कि हर पुरुष आज नारी के बदलते रूप, उसकी संघर्षशील वृत्ति, मनोबल, उसका उत्साह तथा उसमें होते परिवर्तनों को देखकर चिंतित हैं कि अगर महिलाओं ने आर्थिक स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली तो उनके कदमों का दास होना पड़ेगा। महिलाओं के विकास के लिए पुरुषों को अपनी संकुचित वृत्ति एवं राजनैतिक चालों का बहुरूपिया आवरण उतारकर नारी का कदम-कदम पर साथ देना होगा। तभी महिला जागृति, साक्षरता, स्वास्थ्य, रोजगार व शिक्षण प्रशिक्षण के माध्यम से महिला विकास के अगम्य मार्ग को गम्य बनाने अथवा दुर्लभ को सुलभ सिद्ध करने का प्रयास किया जा सकता है।

वर्तमान के अतीत की आधार शिला पर खड़े होने तथा भविष्य के वर्तमान का दर्पण होने के कारण आज की स्थिति व वस्तुनिष्ठ युग को देखते हुए, जबकि मानव को पूर्व की अपेक्षा सर्वाधिक बुद्धिशील मानव के रूप में जाना जाता है, महिलाओं की भागीदारी के बिना राज्य, राष्ट्रीय अथवा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विकास की कल्पना तक संभव नहीं है। इस संदर्भ में महिलाओं में भी आवश्यकतानुरूप सजगता होनी चाहिए तभी जन सामान्य के हृदय में इस विचारधारा को कार्यात्मक परिणति मिल सकती है। आशावादी दृष्टिकोण व सकारात्मक अभिव्यक्ति ही महिलाओं के विकास में सक्रिय भूमिका निभा सकती है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि विकास कोई ऐसी अवधारणा नहीं है जिसमें महिला व पुरुष के मध्य भागीदारी का विभेदीकरण किया जाए। यह तो एक ऐसी समग्र प्रक्रिया का नाम है जिसमें सम्पूर्ण मानव जाति को सम्मिलित रूप में भाग लेकर अपने प्रयासों द्वारा न केवल तथाकथित आंकड़ों के माध्यम से सरकारी कागजों पर विकास की दर में वृद्धि को दर्शाना है अपितु जनसामान्य द्वारा उसके विचार दृष्टिकोण, व्यवहार अभिवृत्ति तथा प्रत्येक क्षेत्र में (चाहे वह सामाजिक क्षेत्र हो या आर्थिक अथवा अन्य कोई भी) उसकी स्थिति में सकारात्मक परिवर्तन को अनुभव भी करना है। और यह महिलाओं व पुरुषों की “प्रतिस्थापक भागदारी” के द्वारा नहीं वरन् “पूरक भागीदारी” द्वारा ही संभव हो सकता है। तभी जीवन का पूर्ण और समुचित विकास हो सकता है। साथ ही महिलाओं की आत्म-जागृति से भावी पीढ़ी व राष्ट्र को विकास के कगार पर पहुँचाया जा सकता है। क्योंकि आज वह समय आ गया है। जिसकी हमें बहुत समय से प्रतीक्षा थी।

इस शोध पत्र की उपयोगिता और सार्थकता इस तथ्य में निहित है कि महिलायें विकास की प्रक्रिया में स्वयं निर्णायक हों जिससे महिलाओं का विकास पूर्णतः गतिशीलता को प्राप्त कर सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1.भारतीय नारी – डॉ. आर. पी. तिवारी एवं डॉ. डी. पी. शुक्ला

- 2.नारी सशक्तीकरण – आशा कौशिक
- 3.महिला अधिकार और कानून – अविनाश माहेश्वरी
- 4.महिला विकास कार्यक्रम – डॉ. आशु रानी
- 5.समकालीन महिला लेखन – डॉ. ओम प्रकाश शर्मा
- 6.साहित्य के दर्पण में नारी – डॉ. सियाराम
- 7.हिन्दी साहित्य कोश – भाग-1, सम्पादक धीरेन्द्र वर्मा

Publish Research Article International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper, Summary of Research Project, Theses, Books and Book Review for publication, you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed, India

- ★ International Scientific Journal Consortium
- ★ OPEN J-GATE

Associated and Indexed, USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Database
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005, Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.net